अध्याय–II

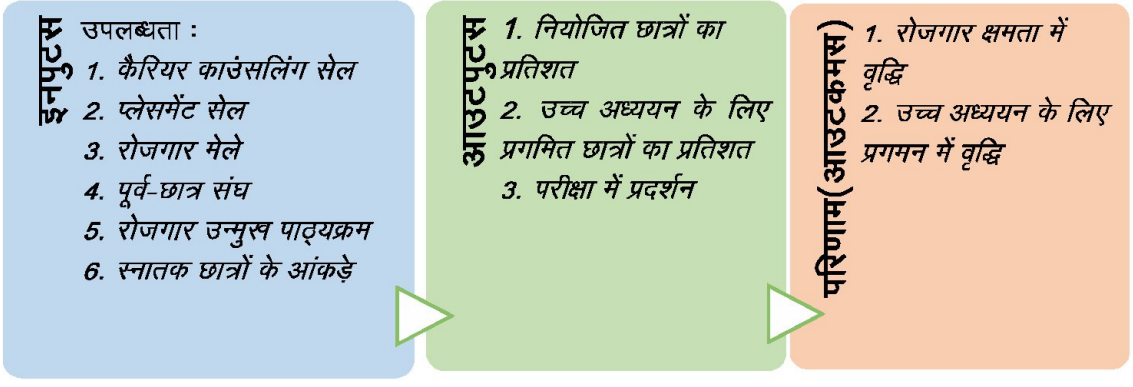
रोजगार और उच्च अध्ययन के लिए छात्रों का प्रगमन

अध्याय – II
रोजगार और उच्च अध्ययन के लिए छात्रों का प्रगमन

इस अध्याय में उच्च शिक्षा के छात्रों से संबंधित परिणामों (आउटकमस) पर चर्चा की गई है, जो छात्रों के रोजगार और उच्च अध्ययन के लिए प्रगमन में बढ़ोतरी करते हैं। लेखापरीक्षा ने रोजगार और उच्च अध्ययन के लिए छात्र प्रगमन की वृद्धि के योगदानकारी कारकों और संस्थागत नवाचारों का मूल्यांकन निम्नलिखित लेखापरीक्षा उद्देश्य के संदर्भ में किया।

लेखा परीक्षा उद्देश्य 1 : क्या उच्च शिक्षा तंत्र उच्च शिक्षण संस्थानों के छात्रों की रोजगार क्षमता और उच्च अध्ययन के लिए प्रगमन में वृद्धि को बढावा देता है

छात्र प्रगमन और इसके प्रति योगदान करने वाले विभिन्न कारकों के बीच संबंध को निम्नलिखित निरूपण के माध्यम से समझा जा सकता है :



छात्र प्रगमन शिक्षा की गुणवत्ता के अलावा कैरियर काउंसलिंग सेल, प्लेसमेंट सेल, पूर्व-छात्र संघों, रोजगार मेलों और स्नातक छात्रों के आंकड़ों के उचित रख्खरख्खाव सहित कई सुविधा सेवा तंत्रों के अस्तित्व और प्रभावी कार्य पद्धति पर सीधे निर्भर करता है। प्लेसमेंट व कैरियर काउंसलिंग सेल और पूर्व-छात्र संघ उद्योगों के साथ जुडाव स्थापित करने और अत्यधिक प्रतिस्पर्धी ढंग से उभरते हुए व्यावसायिक पैटर्न के संदर्भ में वास्तविकताओं और रोजगार विविधताओं के समक्ष रोजगार के अवसर तलाशनें में उचित मार्गदर्शन के साथ छात्रों की मदद करते हैं। इसके अतिरिक्त, पाठ्यक्रम के पहलुओं जैसे कि रोजगार केंद्रित कोर्स, इंटर्नशिप और फील्ड प्रोजेक्ट आदि के माध्यम से भी रोजगार क्षमता में वृद्धि की जाती है।

अनुच्छेद 2.1.1.1 (ii), एवं 2.1.2.2 (i) और 2.1.2.3 के सम्बन्ध में राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर और जेएनवीयू, जोधपुर ने अपने सभी विभागों के लिए समेकित और पूर्ण सूचना प्रदान नहीं की। सम्पूर्ण सूचना की अनुपलब्धता के कारण, लेखापरीक्षा ने संबंधित विश्वविद्यालयों के चयनित 11 विभागों[13] से ऐसी सूचना एकत्र की।

---

13 रसायन विज्ञान, प्राणी विज्ञान, भौतिक विज्ञान, लेखा शास्त्र एवं व्यवसायिक सांख्यिकी, व्यवसायिक प्रशासन, हिंदी, अंग्रेजी, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, भूगोल और अर्थशास्त्र।

2.1 रोजगार क्षमता

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन उस कौशल, ज्ञान और दक्षताओं की उपस्थिति को जो कि किसी कर्मचारी के रोजगार को सुरक्षित रखने और बनाए रखने, कार्य में प्रगति और परिवर्तन के साथ सामना करने की क्षमता में वृद्धि करते हैं, रोजगार क्षमता के रूप में परिभाषित करता है। कोई व्यक्ति रोजगार के लिए सबसे अधिक योग्य तब होता है जब उनके पास व्यापक शिक्षा और प्रशिक्षण एवं सामूहिक कार्य क्षमता, समस्या समाधान, सूचना व संप्रेषण प्रौद्योगिकी (आईसीटी) और संचार तथा भाषा कौशल सहित बुनियादी एवं सुवाहय उच्च स्तरीय कौशल होता हैं।

रोजगार क्षमता में सामान्य कौशल महत्वपूर्ण हैं क्योंकि श्रम बाजार तीव्र प्रतिस्पर्धी है, और नियोक्ता ऐसे लोगों की तलाश कर रहे हैं जो कि लचीले होते हैं और विभिन्न वातावरणों में विभिन्न प्रकार के कार्य करने की क्षमता रखते हैं।

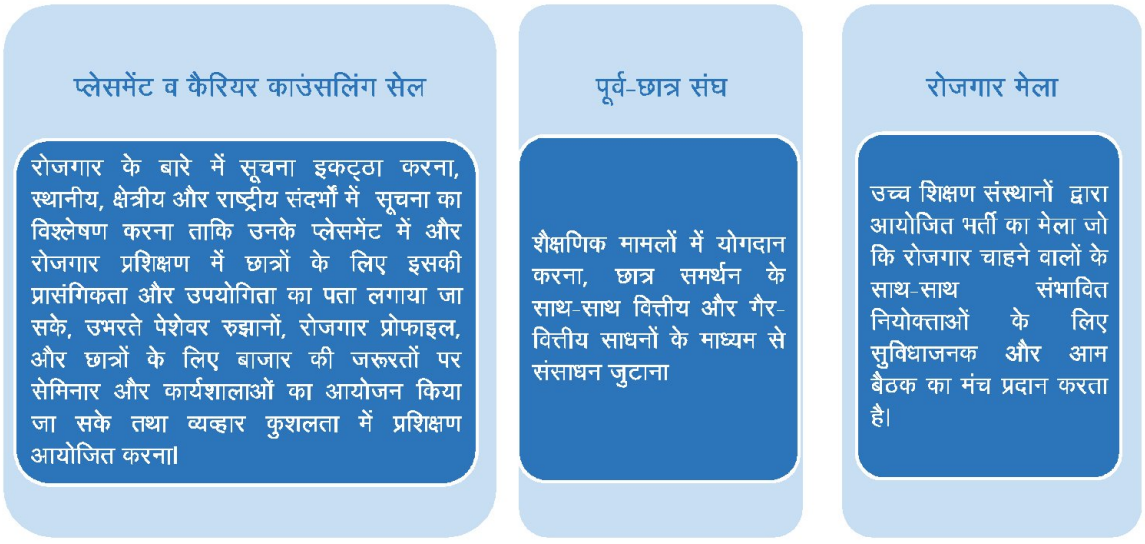
इंडिया स्किल्स रिपोर्ट 2020[14] के अनुसार 2014-20 की अवधि के दौरान, अखिल भारतीय स्तर पर, बीएससी, बीए एवं बी कॉम स्नातक कार्यक्रमों ने औसतन 37.47 प्रतिशत, 32.34 प्रतिशत और 31.86 प्रतिशत रोजगार योग्य स्नातक तैयार किए। इसके विपरीत, सामान्य स्ट्रीम के 60 प्रतिशत से अधिक स्नातक रोजगार योग्य नहीं थे। यह सामान्य स्ट्रीम में उच्च शिक्षा प्रदान करने वाले सभी उच्च शिक्षण संस्थानों में एक उच्च स्तरीय रोजगार सुविधा सेवा तंत्र की स्थापना के लिए मजबूत औचित्य है।

2.1.1 रोजगार सुविधा सेवा तंत्र का अस्तित्व और प्रभावी कार्य

उच्च शिक्षण संस्थानों में प्लेसमेंट सेल, कैरियर काउंसलिंग सेल और पूर्व-छात्रसंघ जैसे रोजगार सुविधा सेवा तंत्र का अस्तित्व दो कारणों से जरूरी है। प्रथम वे रोजगार के इच्छुक लोगों की आकांक्षाओं को बढ़ा कर उन्हें सही क्षेत्रों की पहचान करने, अपने कार्य कौशल को बेहतर करने और नियोक्ताओं द्वारा स्वीकार किये जाने में एक अभिन्न भूमिका निभाते हैं। दूसरी ओर, वे प्रशिक्षित मानव संसाधन के विशाल समूह तक पहुंचने के लिए संभावित नियोक्ताओं को एक मंच भी प्रदान करते हैं।

14 इंडिया स्किल रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी), ऑल इंडिया काउंसिल फॉर टेक्निकल एजुकेशन (एआईसीटीई) और एसोसिएशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज के सहयोग से व्हीवोक्स, पीपल स्ट्रॉन्ग एवं कन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री की एक संयुक्त पहल है। यह रिपोर्ट भारत के 28 राज्यों और नौ केंद्र शासित प्रदेशों के 3500 शैक्षणिक संस्थानों के 3,00,000 उम्मीदवारों, तथा नौ उद्योग क्षेत्रों में फैले 150 से अधिक कॉर्पोरेट्स के मूल्यांकन का एक संयोजन है। यह रिपोर्ट 2014 से जारी होने वाली वार्षिक संस्करण का सातवां संस्करण है ।

चार्ट 2.1: रोजगार सुविधा सेवा तंत्र



बाजार की माँगों और व्यक्तिगत अपेक्षाओं के बारे में दृष्टिकोण के अंतराल को ऐसे तंत्र के प्रभावी प्रचालन के माध्यम से कम किया जा सकता है।

रोजगार सुविधा सेवा तंत्रों के संबंध में नमूना-जांच किए गए उच्च शिक्षण संस्थानों की लेखापरीक्षा ने निम्नलिखित बिन्दुओं को प्रकट किया :

2.1.1.1 नमूना-जांच किए गए विश्वविद्यालयों में :

(i) ***प्लेसमेंट सेल*** : राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर; जीजीटीयू, बांसवाड़ा तथा जेएनवीयू, जोधपुर और उनके चयनित संघटक महाविद्यालयों ने 2014-19 के दौरान सामान्य स्ट्रीम (विज्ञान, कला और वाणिज्य) के लिए प्लेसमेंट सेल का गठन नहीं किया। ऐसा इस तथ्य के बावजूद भी था कि यूजीसी ने जेएनवीयू, जोधपुर से विश्वविद्यालय परिसर में काउंसलिंग व प्लेसमेंट सेल स्थापित करने और राष्ट्रीय कौशल विकास निगम के प्रतिनिधि को सम्मिलित करने का अनुरोध (दिसम्बर 2014) किया था।

(ii) ***कैरियर काउंसलिंग सेल तथा पूर्व-छात्र संघ***

- राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर और दो चयनित संघटक महाविद्यालयों में, छात्रों को शैक्षणिक और भविष्य के कैरियर विकल्पों से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए कैरियर काउंसलिंग सेल के स्थान पर एक छात्र सलाहकार परिषद् स्थापित (अक्टूबर 2016) किया था। छात्र सलाहकार परिषद् के निदेशक ने लेखापरीक्षा को बताया कि वर्ष 2016-19 के दौरान 4,930 छात्रों को भविष्य के कैरियर विकल्पों[15] से संबंधित मार्गदर्शन प्रदान किया गया था।

  इस प्रकार, छात्र सलाहकार परिषद् ने अपने को केवल कैरियर कोर्स से संबंधित सूचना प्रदान करने तक ही सीमित रखा। इसने विभिन्न संस्थानों में रोजगार अवसर, संभावित

15 उपलब्ध कैरियर कोर्स, भारत और विदेशों के भीतर संस्थानों द्वारा प्रदान करने वाले कैरियर कोर्स, उपलब्ध छात्रवृत्ति आदि।

पदस्थापन के अवसरों से संबंधित सूचना प्रदान नहीं किया। साथ ही इसने छात्रों के प्लेसमेंट तथा रोजगार के प्रशिक्षण के लिए उनकी प्रांसगिकता और उपयोगिता का पता लगाने के लिए स्थानीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय संदर्भों में सूचनाओं का आकलन नहीं किया, जैसा कि यूजीसी के दिशा निर्देशों में अपेक्षित था।

विश्वविद्यालय के दो संघटक महाविद्यालयों में से केवल एक संघटक महाविद्यालय (महारानी महाविद्यालय) और दो विभागों (प्राणी विज्ञान और भौतिक विज्ञान) में पूर्व-छात्र संघ गठित किए गए थे । यद्यपि पूर्व-छात्र संघ की वर्ष 2014-19 के दौरान नौ बैठकें आयोजित की गई थीं, लेकिन प्लेसमेंट और कैरियर मार्गदर्शन इन पूर्व-छात्र संघ बैठकों की कार्य-सूची का हिस्सा नहीं थे ।

- जेएनवीयू, जोधपुर और एक संघटक महाविद्यालय ने ग्यारहवीं पंच वर्षीय योजना के अनुसरण में एक कैरियर काउंसलिंग सेल की स्थापना (जनवरी 2010) की थी, लेकिन निधियों की अनुपलब्धता के कारण यह मार्च 2017 से निष्क्रिय हो गया ।

  वर्ष 2014-19 के दौरान ना तो जेएनवीयू, जोधपुर में और ना ही उसके किसी संघटक महाविद्यालय में पूर्व-छात्र संघ का गठन किया गया था।
- जीजीटीयू, बांसवाड़ा ने 2014-19 के दौरान कैरियर काउंसलिंग सेल और पूर्व-छात्र संघ गठित नहीं किए।

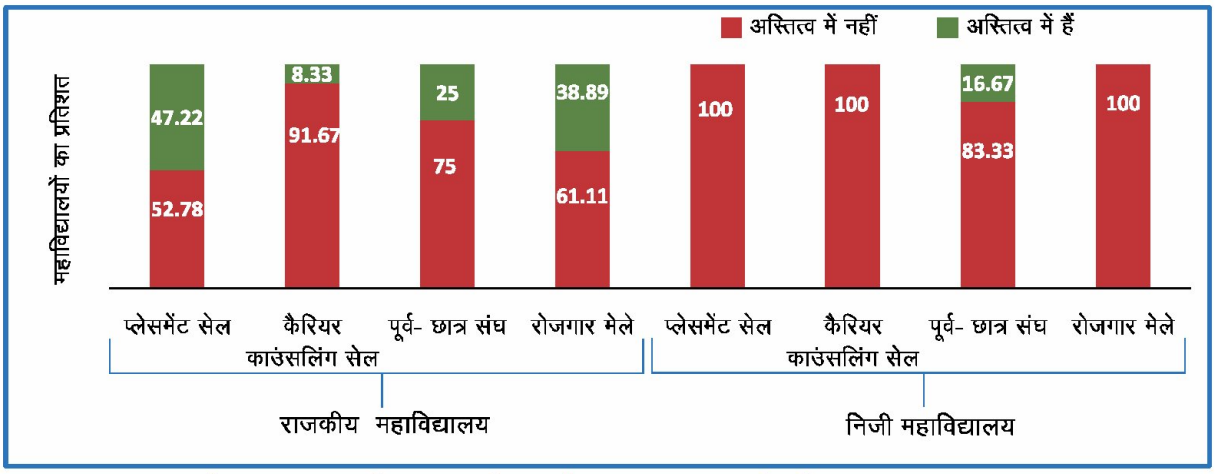
(iii) रोजगार मेलाः राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर और उसके दो संघटक महाविद्यालयों ने वर्ष 2014-19 के दौरान केवल एक रोजगार मेले का आयोजन किया (वर्ष 2016 में), जिसमें 57 कम्पनियों/ नियोक्ताओं ने भाग लिया । भाग लेने वाले 4,000 छात्रों में से 449 को रोजगार मिला। अपने संघटक महाविद्यालय सहित जेएनवीयू, जोधपुर और जीजीटीयू, बांसवाड़ा ने 2014-19 के दौरान कोई रोजगार मेला आयोजित नहीं किया ।

जेएनवीयू, जोधपुर और जीजीटीयू, बांसवाड़ा ने रोजगार सुविधा सेवा तंत्र के बारे में तथ्यों को स्वीकार किया (जून 2020)। जीजीटीयू, बांसवाड़ा ने आगे अवगत कराया कि, एक नव स्थापित (2012) विश्वविद्यालय होने के कारण, उसे कई अवसंरचनात्मक और संसाधनों की कमियों जैसे कि स्वयं के भवन का अभाव, शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों की कमी आदि का सामना करना पड़ा। अतः वह कैरियर काउंसलिंग सेल, और पूर्व-छात्र संघ की स्थापना को प्राथमिकता नहीं दे सकी । राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने तथ्यों को स्वीकार किया (जनवरी 2021) और अवगत कराया कि प्लेसमेंट सेल के गठन तथा विश्वविद्यालय और संघटक महाविद्यालयों के सभी विभागों में कैरियर काउंसिल सेल व पूर्व-छात्र संघों की स्थापना के लिए निर्देश जारी किए जाएंगे ।

2.1.1.2 नमूना जांच किए गए महाविद्यालयों में :

राज्य के विश्वविद्यालयों के लिए यूजीसी दिशानिर्देशों के अनुरूप आयुक्त, कॉलेज शिक्षा ने सभी राजकीय महाविद्यालयों के प्राचार्यों को अपने महाविद्यालय में प्लेसमेंट सेल का गठन करने हेतु निर्देश दिए (सितंबर 2014) थे। नमूना जांच किए गए महाविद्यालयों में प्लेसमेंट सैल और अन्य रोजगार सुविधा सेवा तंत्र के अस्तित्व से संबंधित स्थिति ***चार्ट 2.2*** में दर्शाई गई है।

चार्ट 2.2: नमूना जांच किए गए महाविद्यालयों में रोजगार सुविधा सेवा तंत्र का अस्तित्व



स्रोत : नमूना जांच किए गए महाविद्यालयों द्वारा उपलब्ध करवाई गई सूचना

चार्ट 2.2 स्पष्ट रूप से दिखाता है कि अधिकांश नमूना जांच किए गए निजी महाविद्यालयों ने अपने-अपने परिसरों में बुनियादी रोजगार सुविधा सेवा तंत्रों का गठन नहीं किया था। इसके अलावा, लेखापरीक्षा में पाया गया कि नमूना जांच किए गए 38.89 प्रतिशत राजकीय महाविद्यालयों ने 2014-19 के दौरान 55 रोजगार मेलों[16] का आयोजन किया जिसमें 114 छात्रों को रोजगार दिया गया।

उत्तम कार्यप्रणाली : गोविंद गुरु राजकीय महाविद्यालय, बांसवाड़ा; राजकीय महाविद्यालय, जयपुर और राजकीय बालिका महाविद्यालय, लालसोट ने 2014-19 के दौरान प्रति वर्ष रोजगार मेलों का आयोजन किया।

2.1.1.3 छात्र सर्वेक्षण के नतीजे : छात्र संतुष्टि सर्वेक्षण का प्रश्न कि *"क्या आप रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए अपनी संस्था के प्लेसमेंट सेल द्वारा की गई पहलों से संतुष्ट हैं?"* के उत्तर में नमूना जांच किए गए 17 राजकीय महाविद्यालयों जहाँ प्लेसमेंट सेल का गठन किया गया था, के 501 छात्रों में से लगभग 48 प्रतिशत छात्रों ने प्लेसमेंट सेल की कार्यप्रणाली को लेकर असंतुष्टि / आंशिक संतुष्टि जाहिर की थी।

इसी तरह, छात्र संतुष्टि सर्वेक्षण के प्रश्न कि *"क्या आप रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए अपने संस्थान के कैरियर काउंसलिंग सेल द्वारा की गई पहलों से संतुष्ट हैं?"* के उत्तर में राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर और नमूना जांच किए गए तीन राजकीय महाविद्यालयों जहाँ छात्र सलाहकार परिषद/कैरियर काउंसलिंग सेल का गठन किया गया था, के 358 छात्रों में से लगभग 50 प्रतिशत छात्रों ने इन पहलों को लेकर असंतुष्टि/आंशिक संतुष्टि जाहिर की थी।

इस प्रकार, रोजगार अवसरों को बढ़ाने और रोजगार की संभावनाओं को सुधारनें हेतु पहल करने के लिए संस्थागत तंत्र स्थापित करने में उच्च शिक्षण संस्थानों की विफलता के कारण छात्र उनके

16 राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुरः नौ महाविद्यालयों में 49 रोजगार मेलों में 91 छात्रों को रोजगार मिला, जीजीटीयू, बांसवाड़ाः दो महाविद्यालयों में छः रोजगार मेलों में 23 छात्रों को रोजगार मिला, जिसमें 13 संभाव्य नियोक्ताओं ने भाग लिया।

पेशेवर क्षितिज को व्यापक बनाने और सार्थक कैरियर हासिल करने की संभावनाओं को बढ़ावा देने वाली इन बुनियादी सुविधाओं से वंचित रह गए।

2.1.2 रोजगार क्षमता में वृद्धि

इंडिया स्किल रिपोर्ट बताती है कि नियोक्ता सकारात्मक रुख, अनुकूलन क्षमता, अधिगम क्षमता और पारस्परिक कौशल रखने वाले रोज़गार इच्छुकों को वरीयता प्रदान करते हैं। इसके अलावा, उच्च शिक्षण संस्थानों के छात्रों को यदि रोजगारोन्मुखी गतिविधियां जैसे कि रोजगार क्षमता वृद्धि कार्यकर्मों, फील्ड प्रोजेक्ट्स/ इंटर्नशिप में भाग लेने का अवसर दिया जाए तो उनकी रोजगार क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। पाठ्यक्रम के दृष्टिकोण से यदि रोजगार केंद्रित कोर्से छात्रों को उपलब्ध कराए जाते हैं तो रोजगार प्राप्ति की संभावनाओं में और अधिक सुधार होता है। एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू औद्योगिक एवं शैक्षिक वचनबद्धता[17] है। यह पारस्परिकता के विचार तथा ज्ञान और विशेषज्ञता की सहभागिता को आगे बढ़ाता है। ***चार्ट 2.3*** में रोजगार वृद्धि में सम्मिलित विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया है।

आगे, राज्य उच्च शिक्षा आयोजना (2015-22) भी स्नातकों की रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए उद्योग के साथ संस्थागत जुड़ाव के निर्माण की परिकल्पना करती है। इसके अनुरूप, राज्य परियोजना निदेशक, राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान ने सभी राजकीय महाविद्यालयों के प्राचार्यों को उनके संबंधित महाविद्यालयों में 2017 और 2018 में आयोजित किए जाने वाले उद्यमिता और रोजगार मेलों में निकट स्थित औद्योगिक क्षेत्रों में स्थित उद्योगों को आमंत्रित करने के निर्देश (अक्टूबर 2017 और जनवरी 2018) दिए थे।

चार्ट 2.3: रोजगार वृद्धि उन्मुख पहलु

रोजगार वृद्धि के कार्यक्रम

- संभावित कर्मचारियों के पास मौजूद कौशल और संभावित नियोक्ताओं द्वारा अपेक्षित क्षमताओं जैसे कि व्यवहार कुशलता/ संचार कौशल, अंग्रेजी भाषा बोलना व लिखना आदि के बीच के अंतर को खत्म करना।

फील्ड प्रोजेक्ट / इंटर्नशिप

- फील्ड प्रोजेक्ट में सर्वेक्षण करना और निर्दिष्ट सामग्री से संबंधित नामित समुदायों या क्षेत्रों से आकड़े एकत्र करना शामिल है। इंटर्नशिप ऐसी गतिविधियां हैं जिनके कुछ क्रेडिट होते हैं और एक निर्धारित संरक्षक के मार्गदर्शन में एक संगठन में काम करना सम्मिलित करती हैं।

औद्योगिक-शैक्षिक जुड़ाव

- शिक्षकों द्वारा उद्योगों को परामर्श देना और उनके शोध एवं विकास गतिविधियों में सहायता । उद्योगों द्वारा छात्रों के प्लेसमेंट/इंटर्नशिप और उनके कौशल विकास और रोजगार में विश्वविद्यालयों की सहायता करने वाले उद्योग।

रोजगारोन्मुखी कोर्स

- कोर्स जिनका पाठ्यक्रम प्रासंगिक है और रोजगार बाजार की गतिशीलता के अनुरूप है।

17 विश्वविद्यालय- औद्योगिक अंतर समन्वय केंद्रों की स्थापना के लिए यूजीसी के दिशानिर्देशों के अनुसार ।

2.1.2.1 रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रमों का संकेतकों पर आधारित मूल्यांकन

लेखापरीक्षा ने नैक बेंचमार्क के आधार पर चार परिणाम संकेतकों के माध्यम से रोजगार क्षमता पर केन्द्रित कोर्स/ नए कोर्सों की संख्या, फील्ड प्रोजेक्ट में भाग लेने वाले छात्रों की संख्या और कार्यात्मक एमओयू की संख्या के सन्दर्भ में नमूना जांच किए गए तीन विश्वविद्यालयों के प्रदर्शन का आकलन किया। यह सूचना नीचे ***तालिका 2.1*** में दी गई हैं (संकेतकों का विवरण *परिशिष्ट 1.1* में क्रम संख्या 1 से 3 तथा 10 पर दिया गया है)। इन संकेतकों के संबंध में लेखापरीक्षा निष्कर्षों पर चर्चा आगामी अनुच्छेदों में की गई हैं ।

तालिका 2.1: संकेतकों के संबंध में नमूना जांच किए गए विश्वविद्यालयों का प्रदर्शन

क्र. सं.	परिणाम संकेतक	अधिकतम चार अंकों के लिए नैक बेंचमार्क	नैक बेंचमार्क के संबंध में नमूना जांच किए गए विश्वविद्यालयों का प्रदर्शन (प्राप्त[18] अंक)				
			राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर		जेएनवीयू, जोधपुर		जीजीटीयू, बांसवाड़ा
			विश्वविद्यालय स्तर	चयनित 11 विभाग	विश्वविद्यालय स्तर	चयनित 11 विभाग	
1.	2014-19 के दौरान रोजगार पर केन्द्रित कोर्सों का औसत प्रतिशत	50 % और अधिक	टिप्पणी नहीं की जा सकी	2	टिप्पणी नहीं की जा सकी	0	0
2.	2014-19 के दौरान रोजगार पर केन्द्रित पेश किए गए नए कोर्सों का प्रतिशत	10 % और अधिक	टिप्पणी नहीं की जा सकी	-	0	-	4
3.	2018-19 के दौरान फील्ड प्रोजेक्ट/इंटर्नशिप में भाग लेने वाले छात्रों का प्रतिशत	10 % और अधिक	टिप्पणी नहीं की जा सकी	0	टिप्पणी नहीं की जा सकी	0	0
4	उद्योग और राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ निष्पादित एमओयू की संख्या	30 और अधिक	0	-	0	-	0

2.1.2.2 रोजगार वृद्धि कार्यक्रम, फील्ड प्रोजेक्ट/इंटर्नशिप तथा उद्योग- शैक्षिक जुड़ाव

नमूना जांच किए गए तीन विश्वविद्यालयों और 66 महाविद्यालयों द्वारा प्रदान की गई सूचना की संवीक्षा में प्रकट हुआ कि :

(i) नमूना जांच किए गए विश्वविद्यालयों में :

- ***रोजगार क्षमता वृद्धि के कार्यक्रम और फील्ड प्रोजेक्ट/इंटर्नशिप:*** नमूना जांच किए गए तीनों विश्वविद्यालयों एवं संघटक महाविद्यालयों में से किसी ने भी 2014-19 के दौरान रोजगार क्षमता वृद्धि कार्यक्रम एवं इंटर्नशिप का आयोजन नहीं किया । तथापि, जेएनवीयू, जोधपुर ने यूजीसी वित्त पोषित कोचिंग योजना के तहत अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति/ओबीसी (गैर-क्रीमी लेयर) और अल्पसंख्यक छात्रों के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

18 लेखापरीक्षा द्वारा चयनित संकेतकों पर विश्वविद्यालय के प्रदर्शन के अनुसार अंक आवंटित किए गए हैं और इसकी तुलना नैक द्वारा प्रत्यायन प्राप्त विश्वविद्यालयों के स्कोरिंग पैटर्न (परिशिष्ट 1.3) का विश्लेषण करके प्राप्त बेंचमार्क के साथ की गई है।

दो प्रकार की कोचिंग कक्षाएं[19] आयोजित की थीं। यद्यपि इन कक्षाओं में 227 छात्र सम्मिलित हुए, लेकिन विश्वविद्यालय ने प्रतियोगी परीक्षाओं/नेट में उपस्थित और उत्तीर्ण छात्रों की संख्या के आकड़े संधारित नहीं किए थें । राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने अवगत कराया (जनवरी 2021) कि रोजगार वृद्धि कार्यक्रमों के संबंध में छात्रों के हित में कार्रवाई की जाएगी। फील्ड प्रोजेक्ट के संबंध में, यह बताया गया कि यह उन पाठ्यक्रमों में किए गए थे जहां आवश्यकता होती है। हालांकि, विश्वविद्यालय ने सामान्य स्ट्रीम के उन पाठ्यक्रमों का ब्योरा नहीं दिया, जिसमें 2014-19 के दौरान फील्ड प्रोजेक्ट किए गए थे ।

- ***औद्योगिक-शैक्षिक जुड़ाव :*** यद्यपि भारतीय सभ्यता, संस्कृति, भाषा और सामाजिक विज्ञान तथा वन शोध के बारे में छात्रों के अध्ययन और शोध गतिविधियों के लिए राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों[20] के साथ राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने एक एमओयू (2011 में) तथा जेएनवीयू, जोधपुर ने दो एमओयू निष्पादित किए, तथापि, नमूना जांच किए गए तीनों विश्वविद्यालयों ने उद्योगों के साथ कोई भी एमओयू नहीं किया।

(ii) नमूना जांच किए गए महाविद्यालयों में :

- नमूना जांच किए गए 36 राजकीय महाविद्यालयों में से, किसी ने भी फील्ड प्रोजेक्ट/ इंटर्नशिप की शुरुआत नहीं की तथा उद्योग अथवा राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों के साथ एमओयू निष्पादित नहीं किए । आगे, जीजीटीयू, बांसवाड़ा से संबद्ध केवल हरिदेव जोशी राजकीय बालिका महाविद्यालय, बांसवाड़ा ने वर्ष 2014-19 के दौरान कंप्यूटर सीखने तथा अंग्रेजी बोलने का एक रोजगार वृद्धि कार्यक्रम आयोजित किया (2017-18)।
- नमूना जांच किए गए 30 निजी महाविद्यालयों में से किसी ने भी वर्ष 2014-19 के दौरान रोजगार क्षमता वृद्धि कार्यक्रम का आयोजन, फील्ड प्रोजेक्ट/इंटर्नशिप की शुरुआत, राष्ट्रीय/ अंतर्राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों के साथ एवं उद्योगों के साथ एमओयू निष्पादित नहीं किए ।

इस प्रकार, लेखापरीक्षा द्वारा पाया गया कि नमूना जांच किए गए 99 प्रतिशत उच्च शिक्षण संस्थानों ने, रोजगार वृद्धि कार्यक्रम आयोजित नहीं किए और जहां भी ये आयोजित किए गए, वहां कोई भी सूचना जो उनकी प्रभावशीलता को समझने में मदद करती, संधारित नहीं की गई थी। इसका अर्थ यह हुआ कि रोजगार के इच्छुक उम्मीदवारों को शैक्षिक रूप से प्रशिक्षित होने के बावजूद, उनके व्यावहारिक कौशल को प्रखर बनाने के लिए साधन उपलब्ध नहीं कराए गए थे और वे वास्तविक विश्व कार्य वातावरण से परिचित होने से वंचित रहे।

2.1.2.3 रोजगार क्षमता/उद्यमिता/ कौशल विकास पर केंद्रित कोर्स

बारहवीं पंचवर्षीय योजना के तहत 'उच्च शिक्षा का समावेशी और गुणात्मक विस्तार' पर जारी

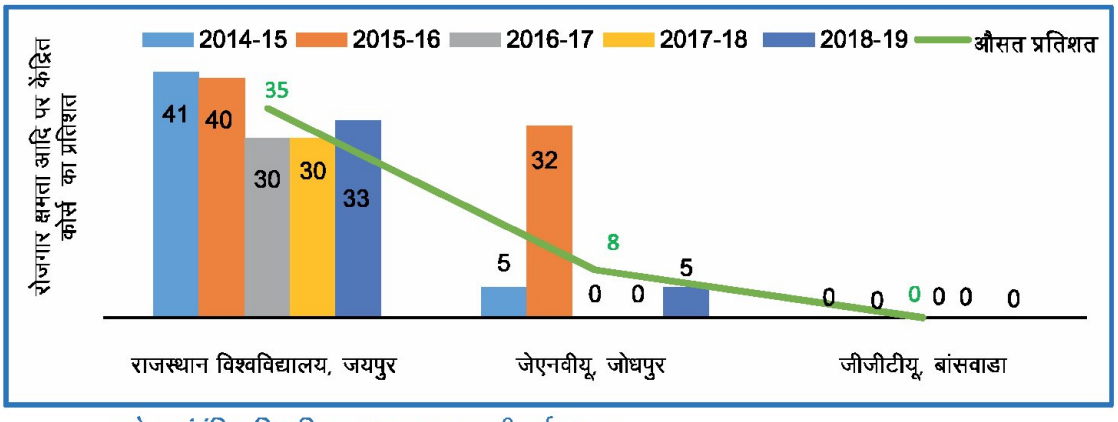
19 प्रतियोगी परीक्षाओं यथा द्वितीय श्रेणी शिक्षक, शिक्षक पात्रता पूर्व परीक्षा, राजस्थान प्रशासनिक सेवा प्रारंभिक परीक्षा, आदि में उपस्थित होने और राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट)/राज्य पात्रता परीक्षा में उपस्थित होने के लिए ।

20 राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने एक अंतर्राष्ट्रीय संस्थान अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज, नई दिल्ली के साथ और जेएनवीयू, जोधपुर ने शुष्क वन अनुसंधान संस्थान और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद के साथ एमओयू निष्पादित किए ।

रिपोर्ट के अनुच्छेद 4.3 के अनुसार, सिलेबस को रोजगार बाजार की गतिशीलता के अनुरूप बनाया जाना चाहिए।

चूंकि विशिष्ट मापदंड जो कि रोजगार क्षमता पर केन्द्रित एक कोर्स को रेखांकित करता है स्पष्ट नहीं हैं तथा इस संबंध में उच्च शिक्षण संस्थानों ने उनके द्वारा चुने गए मापदंडों के बारे में भी कोई सूचना नहीं दी थी, इसलिए इस भाग में लेखापरीक्षा टिप्पणियां संबंधित नमूना जांच किए गए विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों द्वारा प्रदान की गई सूचना पर आधारित है। इस प्रकार, एक विश्वविद्यालय ने एक कोर्स विशेष को रोजगार क्षमता पर केंद्रित कोर्स[21] के हिस्से के रूप में सम्मिलित किया था, जबकि दूसरे विश्वविद्यालय ने उसी कोर्स को बाहर रखा। 2014-19 के दौरान नमूना जांच किए गए तीन विश्वविद्यालयों में रोजगार क्षमता / उद्यमिता / कौशल विकास पर केंद्रित कोर्सों की स्थिति ***चार्ट 2.4*** में नीचे दी गई है।

चार्ट 2.4 : रोजगार क्षमता / उद्यमिता/ कौशल विकास पर केन्द्रित कोर्स



स्रोतः संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की गई सूचना

चार्ट 2.4 स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि पिछले कुछ वर्षों में, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर और जेएनवीयू, जोधपुर में रोजगार क्षमता पर केंद्रित कोर्सों की संख्या में कमी हुई है। चिंताजनक बात है कि, 2014-19 के दौरान, जीजीटीयू, बांसवाड़ा में चलाए जा रहे कोर्सों में से कोई भी कोर्स रोजगार क्षमता/उद्यमिता/ कौशल विकास पर केंद्रित नहीं है।

जेएनवीयू, जोधपुर ने तथ्यों को स्वीकार (जून 2020) कर लिया। जीजीटीयू, बांसवाड़ा ने अवगत कराया (जून 2020) कि एमबीए, पीजीडी (योग), डिप्लोमा इन होटल मैनेजमेंट और एमए इन एजुकेशन कार्यक्रम विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित किए जा रहे हैं जो कि छात्रों को अधिक रोजगारपरक बनाते हैं। राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने अवगत कराया (जनवरी 2021) कि इस संबंध में भविष्य में और अधिक जोर दिया जाएगा।

तथ्य यह है कि सामान्य स्ट्रीम की शिक्षा में कोई भी कोर्स रोजगार क्षमता पर केंद्रित नहीं है।

---

21 उदाहरण के लिए, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने सूचित किया कि एमकॉम (एबीएसटी), एमकॉम (सीएमए), एमएससी (भौतिक विज्ञान) रोजगार क्षमता पर केंद्रित है, जबकि जेएनवीयू, जोधपुर ने कहा कि ये कोर्स रोजगार क्षमता पर केंद्रित नहीं हैं।

- आगे, नमूना जांच किए गए 66 महाविद्यालयों में 2014-19 के दौरान चल रहें कोर्सों में से कोई भी कोर्स रोजगार क्षमता /उद्यमिता /कौशल विकास पर केन्द्रित नहीं था ।

2.1.2.4 नए कोर्स प्रारंभ करना

नमूना जांच किए गए तीनों विश्वविद्यालयों द्वारा प्रदान की गई सूचना की संवीक्षा में प्रकट हुआ कि जेएनवीयू, जोधपुर और जीजीटीयू, बांसवाड़ा ने 2014-19 के दौरान क्रमशः दो नए कोर्स और एक नए कोर्स प्रारम्भ किए गए थे और ये सभी कोर्स रोजगार क्षमता पर केंद्रित थे। हालांकि राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने उसी अवधि के दौरान पांच नए कोर्स प्रारम्भ किए, लेकिन उन्होंने यह अवगत नहीं कराया कि इनमें से कितने कोर्स रोजगार क्षमता पर केंद्रित थे।

जीजीटीयू, बांसवाड़ा ने 2018-19 से प्रबंधक मंडल[22] की मंजूरी के बिना विज्ञान संकाय {एमएससी (गणित)} में एक नया कोर्स शुरू किया और कला संकाय के तीन कोर्स बंद कर दिए। पूछताछ करने पर, विश्वविद्यालय ने अवगत कराया (जनवरी 2020) कि प्रशासनिक कारण से कोर्स शुरू और बंद किए गए थे । राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने अवगत कराया (जनवरी 2021) कि विश्वविद्यालय द्वारा संसाधनों की कमी के कारण नए कोर्स शुरू करने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है । हालांकि इस संबंध में भविष्य में और अधिक जोर दिया जाएगा ।

2.1.3 उच्च शिक्षण संस्थानों के छात्रों के परिणामों का संकेतकों पर आधारित मूल्यांकन

नमूना जांच किए गए उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा रोजगार क्षमता में वृद्धि और उच्च अध्ययन के लिए प्रगमन में प्रदर्शन का आकलन रोजगार नियोजन, उच्च अध्ययन में प्रगमन और प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्ण छात्रों के विश्लेषण के आधार पर किया गया है। नैक बेंचमार्क के आधार पर इन मापदंडों का मूल्यांकन निम्नलिखित तीन संकेतकों के माध्यम से किया गया है- *2018-19 के दौरान उच्च अध्ययन के लिए प्रगमन करने वाले छात्रों का प्रतिशत, 2014-19 के दौरान राज्य/ राष्ट्रीय / अंतर्राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं में उत्तीर्ण छात्रों का औसत प्रतिशत तथा 2014-19 के दौरान निवर्तमान छात्रों के प्लेसमेंट का औसत प्रतिशत* (***परिशिष्ट 1.1*** का क्रम संख्या 4,5 एवं 11) ।

2.1.3.1 नमूना जांच किए गए विश्वविद्यालयों में :

- ***छात्रों के जॉब प्लेसमेंट की स्थिति :*** छात्रों के जॉब प्लेसमेंट से तात्पर्य संस्थान द्वारा किए गए विभिन्न प्रयासों के माध्यम से छात्र द्वारा अपने कार्यक्रम को पूरा करने से पहले रोजगार प्राप्त करना है । लेखापरीक्षा में पाया गया कि नमूना जांच किए गए सभी तीन विश्वविद्यालयों और चयनित संघटक महाविद्यालयों ने 2014-19 के दौरान कैंपस प्लेसमेंट के माध्यम से रोजगार पाने वाले छात्रों के आंकडें संघारित नहीं किए ।

- ***उच्च अध्ययन के लिए प्रगमन :*** जो छात्र उच्च अध्ययन में प्रगमन की इच्छा रखते है उनके लिए स्नातकोत्तर, डॉक्टरेट और पोस्ट-डॉक्टरेट आदि का अध्धयन भी कैरियर का एक विकल्प है। लेखापरीक्षा में पाया गया कि सभी नमूना जांच किए गए तीन विश्वविद्यालयों ने अपने कैंपस

22 यह विश्वविद्यालय का शीर्ष कार्यकारी निकाय है ।

के साथ-साथ संघटक महाविद्यालयों से 2018-19 के दौरान उच्च अध्ययन करने वाले निवर्तमान छात्रों के आंकडें संघारित नहीं किए।

- ***प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होना :*** राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर आयोजित प्रतियोगी परिक्षाएं छात्र प्रगमन के लिए अच्छे अवसर प्रदान करती हैं। स्नातक छात्रों को रोजगार के लिए अहर्ता प्राप्त करने या उच्च अध्ययन के लिए प्रगमन के लिए कई प्रतियोगी परीक्षाएँ आयोजित की जाती हैं। लेखापरीक्षा ने यह पाया कि नमूना जांच किए गए सभी तीन विश्वविद्यालयों ने उन छात्रों के आंकड़ें संधारित नहीं किए जो 2014-19 के दौरान अपने कैंपस के साथ-साथ चयनित संघटक महाविद्यालयों से राज्य/राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए थे।

- हालांकि राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (2016 में) और जेएनवीयू जोधपुर ने (2011 में) पूर्व में ही नैक द्वारा प्रत्यायन प्राप्त कर लिया था, तो भी दोनों विश्वविद्यालयों ने रोजगार और उच्च अध्ययन के लिए छात्र प्रगमन के संबंध में आंकड़े संघारित नहीं किए। यह सुनिश्चित करना आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (आईक्यूएसी) की ज़िम्मेदारी थी कि प्रत्यायन के लिए प्रासंगिक सूचनाएं नियमित रूप से संधारित तथा अद्यतन की जाए। इस प्रकार, यह इन विश्वविद्यालयों में आईक्यूएसी की कार्य पद्धति में विफलता को इंगित करता है जिसकी **अध्याय-V में चर्चा** की गई है।

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने अवगत कराया (जनवरी 2021) कि समय-समय पर रोजगार मेले आयोजित किए जाएंगे और संबंधित विभागों और महाविद्यालयों को रोजगार नियोजन तथा प्रतियोगी परीक्षाओं के आंकडें संधारण करने के संबंध में निर्देश जारी किए जाएंगे।

इस प्रकार, लेखापरीक्षा आवश्यक आंकडें संघारित नहीं किए जाने के कारण, नमूना जांच किए गए सभी विश्वविद्यालयों में उच्च अध्ययन के लिए प्रगमन करने वाले छात्रों, राज्य/राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रों और कैंपस प्लेसमेंट के माध्यम से रोजगार प्राप्त छात्रों के संबंध में विश्वविद्यालयों के प्रदर्शन का आकलन तथा उस पर टिप्पणी नहीं कर सकी। अतः इन विश्वविद्यालयों में रोजगार क्षमता तथा उच्च शिक्षा के लिए प्रगमन में वृद्धि का आकलन नहीं किया जा सका।

2.1.3.2 नमूना जांच किए गए महाविद्यालयों में :

- हालांकि, नमूना जांच किए गए 36 में से 11 (30.56 प्रतिशत) राजकीय महाविद्यालयों में प्लेसमेंट की सूचना संधारित करने की प्रणाली पाई गई थी, लेकिन इनमें से केवल चार महाविद्यालय[23] ही 2014-19 के दौरान औसतन 0.13 प्रतिशत (85,044 छात्रों में से 114) छात्रों को रोजगार देने में सक्षम हुए।

---

23 राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुरः दो राजकीय महाविद्यालय (58,750 छात्रों में से 91 को रोजगार दिया गया था) और जीजीटीयू, बांसवाड़ाः दो राजकीय महाविद्यालय (26,294 छात्रों में से 23 को रोजगार दिया गया था)।

आगे, आयुक्त, कॉलेज शिक्षा द्वारा उपलब्ध करवाई गई सूचना (आठवीं विधानसभा सत्र के एक प्रश्न संख्या 2840 के उत्तर में) की संवीक्षा में प्रकट हुआ कि 2014-18 की अवधि के दौरान 52 राजकीय महाविद्यालयों में आयोजित कैंपस प्लेसमेंट के माध्यम से कुल 2,652 छात्रों को रोजगार मिला। इन 52 राजकीय महाविद्यालयों में से 11 की नमूना जांच इस निष्पादन लेखापरीक्षा में की गई और नौ महाविद्यालयों[24] के सम्बन्ध में आंकड़ों में महत्वपूर्ण विसंगतियां देखी गईं। आयुक्तालय ने प्रतिवेदित किया की इन नौ महाविद्यालयों में 582 छात्रों को प्लेसमेंट मिला था जबकि इन महाविद्यालयों ने लेखापरीक्षा को सूचित किया कि केवल 45 छात्रों को रोजगार मिला था (विवरण ***परिशिष्ट 2.1*** में दिया गया है)।

- नमूना जांच किए गए 36 राजकीय महाविद्यालयों में से चार महाविद्यालयों [25] में 2014-19 के दौरान राज्य /राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय परीक्षा में 156 छात्र उत्तीर्ण हुए। आगे, इन चार राजकीय महाविद्यालयों में, परीक्षाओं में उपस्थित होने वाले छात्रों की संख्या उपलब्ध नहीं थी। इस तरह की सूचना के अभाव में, उत्तीर्ण हुए छात्रों के प्रतिशत की गणना नहीं की जा सकी।
- नमूना जांच किए गए 30 निजी महाविद्यालयों में से किसी ने भी छात्रों के प्लेसमेंट, उच्च अध्ययन के लिए प्रगमन और 2014-19 के दौरान राज्य/राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए छात्रों के संबंध में आंकडें संधारित नहीं किए।

2.2 परीक्षाओं में छात्रों का प्रदर्शन

एक उच्च शिक्षण संस्थान में शिक्षण अधिगम की प्रभावशीलता परीक्षाओं में छात्रों के प्रदर्शन में परिलक्षित होती है। इस तरह का प्रदर्शन अधिगम परिणामों की ऐसी विशेष क्षमताएं है, जिनसे एक कोर्स और/या एक कार्यक्रम के सफल समापन पर एक छात्र को सक्षम होना चाहिए, की प्राप्ति के रूप में देखा जाता है ।

इस संदर्भ में, नमूना जांच किए गए उच्च शिक्षण संस्थानों का मूल्यांकन ***2018-19 के दौरान उत्तीर्ण छात्रों का प्रतिशत (परिशिष्ट 1.1*** का क्रम संख्या 12) के अनुसार किया गया था। लेखापरीक्षा ने नमूना जांच किए गए विश्वविद्यालयों के छात्रों के श्रेणी (डिवीज़न) वार नतीजों का भी विश्लेषण किया ।

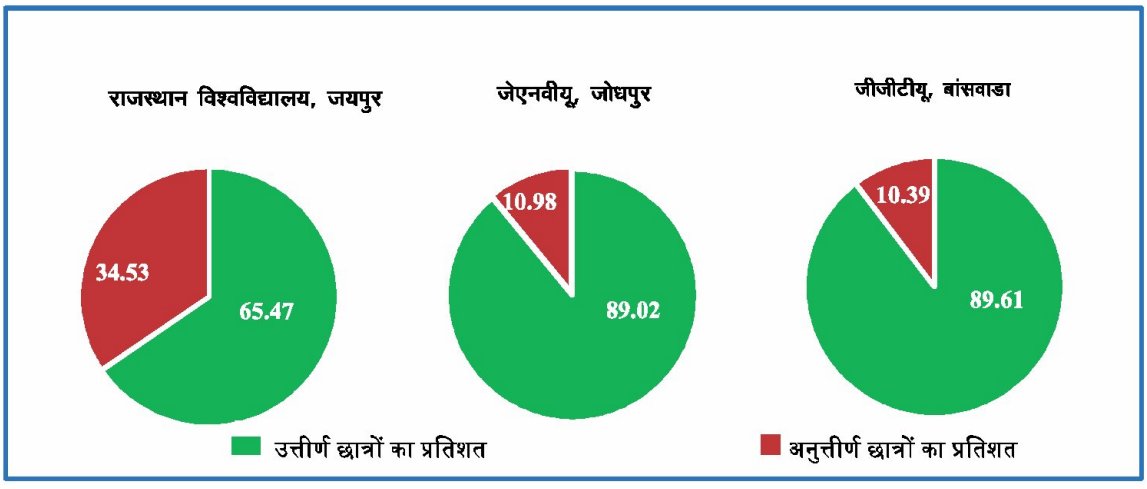
नमूना जांच किए गए विश्वविद्यालयों में 2018-19 के दौरान विज्ञान, कला और वाणिज्य के स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में अंतिम वर्ष की परीक्षाओं में सम्मिलित सभी छात्रों का प्रदर्शन ***चार्ट 2.5*** में नीचे दिया गया है ।

---

24 राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुरः तीन राजकीय महाविद्यालय (आयुक्तालय द्वारा प्रतिवेदित किए गए प्लेसमेंट की संख्याः 223 और लेखापरीक्षा को संबंधित महाविद्यालयों द्वारा सूचित प्लेसमेंट की संख्याः 30; जेएनवीयू,जोधपुरः चार महाविद्यालय (14 और 0) और जीजीटीयू, बांसवाड़ाः दो महाविद्यालय (345 और 15)।

25 राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुरः तीन राजकीय महाविद्यालयों में 141 छात्र उत्तीर्ण हुए और जीजीटीयू, बांसवाड़ाः एक राजकीय महाविद्यालय में 15 छात्र उत्तीर्ण हुए ।

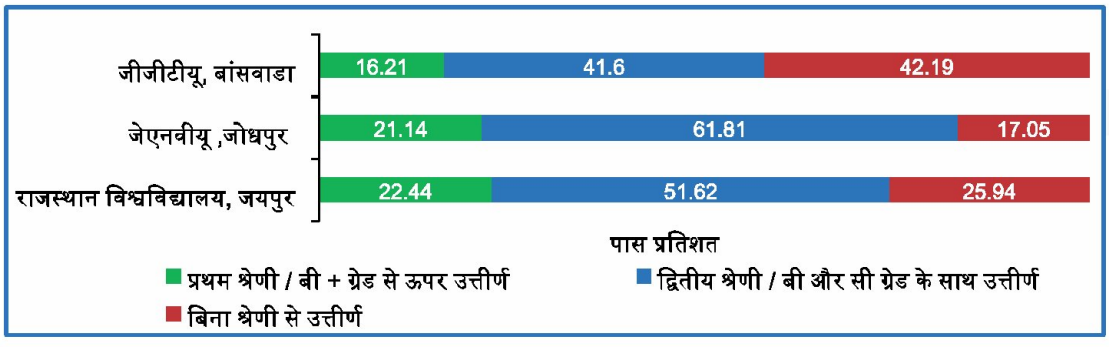
चार्ट 2.5 : 2018-19 के दौरान परीक्षाओं में छात्रों का प्रदर्शन



चार्ट 2.5 से यह देखा जा सकता है कि 2018-19 के दौरान राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर और उनके सभी संघटक/संबद्ध महाविद्यालयों (पास प्रतिशत 65.47 के साथ) का प्रदर्शन अन्य दो विश्वविद्यालयों की तुलना में कमतर था, जबकि यह राज्य का सबसे बड़ा और पुराना सार्वजनिक विश्वविद्यालय है।

इसके अलावा, सभी तीन विश्वविद्यालयों में, प्रथम श्रेणी/बी+ ग्रेड से ऊपर उत्तीर्ण होने वाले छात्रों की संख्या अत्यधिक असंतोषजनक थी (16.21 प्रतिशत और 22.44 प्रतिशत के बीच), जिसे आगे ***चार्ट 2.6*** में दर्शाया गया है।

चार्ट 2.6 : परीक्षाओं में छात्रों का श्रेणी-वार प्रदर्शन

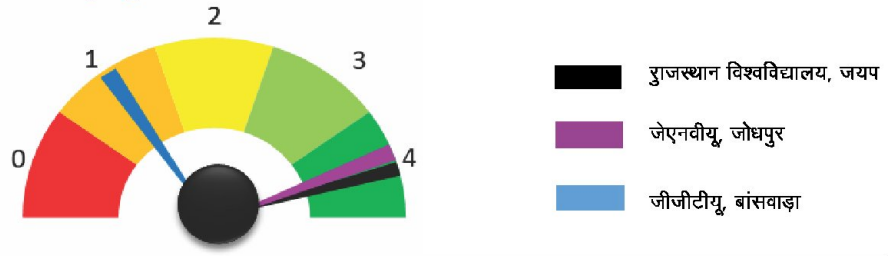


जेएनवीयू, जोधपुर ने बताया कि उन्होंने यूजी और पीजी स्तर के छात्रों के लिए विभिन्न शैक्षणिक विषयों में अपने शैक्षणिक कौशल और भाषाई दक्षता में सुधार के लिए, और अन्य शैक्षिक कार्यों के लिए एक मजबूत नींव प्रदान करने और ज्ञान को मजबूत करने के लिए बुनियादी विषयों की तथा विभिन्न विषयों में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों के कौशल को बढ़ाने के लिए उपचारात्मक कोचिंग का आयोजन किया। जीजीटीयू, बांसवाडा ने खराब स्कोरिंग वाले छात्रों के लिए कोई उपचारात्मक कक्षाएं आयोजित नहीं कीं, जबकि राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने इस विषय मे जानकारी नहीं दी।

- आगे, केवल नमूना जांच किए गए विश्वविद्यालयों के कैंपस/संघटक महाविद्यालयों में जो छात्र परीक्षा में उपस्थित हुए थे उनमें, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में छात्रों का उत्तीर्ण प्रतिशत

90.12 प्रतिशत, जेएनवीयू, जोधपुर में 93.26 प्रतिशत और जीजीटीयू, बांसवाड़ा में 70.27 प्रतिशत था। नैक द्वारा विश्वविद्यालयों की प्रत्यायन की प्रक्रिया में ***2018-19 के दौरान उत्तीर्ण छात्रों का प्रतिशत*** संकेतक के लिए, 90 प्रतिशत या इससे अधिक छात्र उत्तीर्ण होने पर किसी संस्थान को अधिकतम अंक प्रदान किए थे। तदनुसार, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर और जेएनवीयू, जोधपुर चार अंक (अधिकतम) और जीजीटीयू, बांसवाड़ा एक अंक प्राप्त करने के लिए पात्र थे।

चार्ट 2.7: चुने हुए संकेतक के आधार पर चयनित विश्वविद्यालयों का प्रदर्शन



उत्तम कार्यप्रणाली : 2014-19 के दौरान हरिदेव जोशी राजकीय बालिका महाविद्यालय, बांसवाड़ा में विज्ञान स्ट्रीम में प्रति वर्ष 100 प्रतिशत छात्र उत्तीर्ण हुए ।

सारांश एवं सिफारिशें

रोजगार क्षमता एवं उच्च अध्ययन के लिए छात्रों का प्रगमन

राज्य में उच्च शिक्षा तंत्र के सभी स्तरों पर छात्रों का रोजगार व उच्च अध्ययन के लिए प्रगमन और प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रदर्शन से संबंधित आंकड़े संधारित करने का तंत्र लगभग गैर-मौजूद था। यहां तक कि नमूना जांच किए गए महाविद्यालयों में भी, ऐसे आंकड़े संधारित नहीं किए जा रहे थे । इस प्रकार छात्र सम्बन्धी मुख्य परिणामों जैसे '**रोजगार क्षमता और उच्च अध्ययन के लिए प्रगमन**' का मूल्यांकन पर्याप्त रूप से नहीं किया जा सका । आगे, निष्क्रिय या गैर-विद्यमान रोजगार सुविधा सेवा तंत्र और रोजगार वृद्धि कार्यक्रमों की कमी के परिणामस्वरूप छात्रों को अच्छा रोजगार पाने और कैरियर विकल्प चुनने के लिए आवश्यक सहायता और सुविधा से वंचित होना पड़ा। हालांकि महाविद्यालय/विश्वविद्यालय की परीक्षाओं को सफलतापूर्वक पूरा करने वाले छात्रों का कुल अनुपात अधिक था, लेकिन प्रथम श्रेणी/ग्रेड बी+ से ऊपर उत्तीर्ण छात्रों का प्रतिशत बहुत कम था ।

सिफारिशें :

1. प्रत्येक उच्च शिक्षण संस्थान को चाहिए कि :

क. वह एक अच्छी तरह से कार्यात्मक प्लेसमेंट सेल, कैरियर काउंसलिंग सेल का गठन करें, और स्नातक छात्रों को रोजगार पाने या उच्च अध्ययन के लिए प्रगमन सुगम बनाने के लिए एक जीवंत पूर्व-छात्र संघ को प्रोत्साहित करें। और

ख. संस्था में प्रदान की जा रही शिक्षा की गुणवत्ता की वास्तविक और उचित स्थिति का चित्रण करने के लिए संबंधित आंकडें एकत्र करने और संधारित करने का एक मजबूत तंत्र बनाए ।